21

बच्चूसूर

मेरे धार्मिक संस्कार का प्रारंभ मेरी माता और पिता के द्वारा दी गयी **रामचरित मानस** के सुंदरकांड और **भगवद् गीता** के दशम अध्यय की शिक्षा से ही हो गया था। मेरी दादी की मोटे अक्षरोंवाले **सुखसागर** को भी मैं बड़ी रुचि के साथ आद्यंत पढ़ गया था यद्यपि उसमें धर्म-भावना का नहीं, कहानी की रोचकता का ही आकर्षण था। मेरी पुस्तक **बलि-निर्वास** में, जो मैंने 1943 में, अर्थात 19 वर्ष की अवस्था में लिखी थी, जितने पौराणिक प्रसंगों का संदर्भ है वह **सुखसागर** के पढ़ने का ही परिणाम है। **सुखसागर** में पौराणिक कथाओं का आकलन बड़ी सरस और सुगम शैली में किया गया है जो मेरी बालबुद्धि के लिए भी दुरूह नहीं था। उसमें मेरी कल्पना की दौड़ के लिए उतना ही विस्तृत क्षेत्र उपलब्ध था जितना **अलिफ लैला** की कहानियों में। परंतु उसे मैं अक्षरशः सत्य मानता था जब कि **अलिफ लैला** की कहानियों को, जो मैं रात में अपने पिता के मुख सुनता था, केवल कहानी के रूप में ही ग्रहण करता था।

मैं पहले कह चुका हूँ कि हमारे परिवार में व्यापारिक वातावरण के साथ-साथ बड़े-बड़े जमींदार और राजाओं के संपर्क से, एक प्रकार का रईसी और अकर्मण्यता का वातावरण भी प्रचुर परिमाण में व्याप्त था। रईसी के वातावरण में धार्मिक आयोजनों की काफी गुंजाइश रहती है। भगवत् चिंतन, साहित्यिक विनोद और बौद्धिक परिचर्चा के लिए जीवन में थोड़ा ठहराव आवश्यक है। भागदौड़ और अर्थोपार्जन की तेज आपाधापी में वह संभव नहीं है। सौभाग्य से बचपन में मुझे वैसा वातावरण उपलब्ध हो गया था जिसके कारण मेरी कवित्व-शक्ति को अंकुरित होने के लिए पर्याप्त अनुकूलता मिल गयी थी। इस अंकुर को प्रस्फुटित करने का श्रेय तो स्वामी नारायणानंद सरस्वती को है पर काव्य के अनुकूल वातावरण सृजित करने के लिए, उसके पूर्व, घर में अक्सर पधारनेवाले एक अद्‌भुत चमत्कारिक व्यक्तित्व के संपर्क का वर्णन आवश्यक है। वह अदभुत व्यक्ति थे—लोकविश्रुत रामायणी आशुकवि, बच्चू सूर। बच्चू सूर जन्मांध थे और सुना जाता है कि बचपन में स्टेशन पर

भीख माँगते देखकर रेल के एक गार्ड ने उन्हें अपने संरक्षण में ले लिया था। गार्ड के साथ एक मुंशी भी रहते थे। गार्ड रामायण के अनूठे विद्वान थे और मुंशीजी की शंकाओं का पार नहीं था। मुंशीजी कहते थे कि रामायण की कोई ऐसी चौपाई नहीं जिस पर मेरी शंका न हो और गार्ड साहब कहते थे कि कोई ऐसी शंका नहीं है जिसका मेरे पास समाधान न हो। दोनों की इस नोक-झोंक को अंधा बालक सुनता रहता था। न जाने कैसे उसकी कुंडलिनी जाग गयी और उसमें अद्‌भुत कवित्व-शक्ति एवं स्मरण शक्ति का स्फुरण हो गया। गार्ड साहब के डिब्बे में जो भी वार्तालाप होता, उसके स्मृतिपटल पर अंकित हो जाता। इस स्मरणशक्ति का पूरा उपयोग शंका-समाधान-शैली में संपूर्ण तुलसीकृत रामायण तक ही सीमित नहीं था। ज्योतिष, आयुर्वेद, पुराण, महाभारत आदि समस्त धार्मिक ग्रंथों को भी बच्चू सूर ने सुन-सुनकर अपने स्मृति के कोषागार में सुरक्षित कर लिया था। उन ग्रंथों को आँखों के अभाव में भी बड़े होने पर और कवि-रूप पर प्रसिद्धि पाकर वे अपनी स्मृति से दुहरा सकते थे। यही नहीं, कौन सा श्लोक किस पृष्ठ में पुस्तक के किस संस्करण में उपलब्ध है, यह भी वे बता सकते थे। उनके कथनानुसार उन्हें 595 ग्रंथ कंठस्थ थे। इस कथन की आंशिक सत्यता मैं कई बार स्वयं देख सका था जब वे पंडितों के द्वारा पुराण, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि के किसी भी प्राचीन ग्रंथ से उद्‌धृत संस्कृत के श्लोक को पूरे संदर्भ के साथ बता देते थे। लोग कहते थे कि उन्हें प्रेत सिद्ध है जिसे लोग कर्णपिशाच कहते हैं और बारबार जो वे मुँह पर हाथ फेरते रहते हैं और पान चबाते रहते हैं वह इसका प्रमाण है क्योंकि कहा जाता है कि प्रेत अर्थात् कर्णपिशाच सिद्ध करनेवाले को मुँह और हाथ बराबर जूठे रखने चाहिए। इस स्मृति की अद्‌भुत देन के साथ-साथ बच्चू सूर को आशुकवित्व की भी अद्‌भुत शक्ति प्राप्त थी। वे घंटो पद्य में भाषण ही नहीं देते थे, रामायण के शंका-समाधानवाले गार्ड और मुंशी के समस्त प्रकरण को भी पद्य में ही सुनाते थे। समस्यापूर्ति करना तो उनके बायें हाथ का खेल था। किसी भी समस्या को सुनते ही वे इस प्रकार घनाक्षरी या सवैया में उसकी पूर्ति कर देते थे मानो वह पहले से ही जोड़कर रखी गयी हो।

तो ऐसे थे बच्चू सूर जिनको मैं बचपन में हप्तों और महीनों अपने घर की बैठक में टिकते हुए देखा करता था। उन्हें हमारे यहाँ से प्रतिदिन एक सौ रुपये की भेंट दी जाती थी। सुबह में भविष्य की चिंता में प्रश्न करनेवाले से प्रति प्रश्न 2 रुपये वे अलग से लेते थे और इससे भी उन्हें यथेष्ट आय हो जाती

थी। बच्चू सूर प्रायः प्रतिवर्ष अपने गाँव खीरी लखीमपुर से गया आकर हमारे घर की बैठक में डेरा डाल देते थे। उनके साथ एक नौकर रहता था जो उनकी देखभाल करता था। जितने दिन वे गया में रहते थे, पंडितों की और काव्यप्रेमियों की हमारे घर पर भीड़ लगी रहती थी और धर्म, काव्य और रामायण की परिचर्चा का वातावरण बना रहता था। मेरे बाल-हृदय पर अवश्य इनका संस्कार पड़ा होगा क्योंकि उनके कहे हुए मानस के कितने ही प्रसंग मेरी स्मृति में अब भी अंकित हैं और उनकी अनेक समस्यापूर्तियों को मैं गद्य में बता सकता हूँ। बच्चू सूर प्रत्येक संध्या में गया के किसी सार्वजनिक स्थान पर जुड़ी सभा में मानस की किसी चौपाई पर कविता में विवेचन करते थे जो घंटों चलता था। यही नहीं, वे एक ही चौपाई पर कई-कई दिन तक शंका-समाधान की शैली में पद्य में भाषण देते थे। भाषण के बीच में उन्हें पानी पीना होता या अन्य कोई बात कहनी होती तो वह भी पद्य में ही कहते थे। एक बार गया में **वर्णाश्रम स्वराज्य संघ** के नाम से सनातनधर्मियों का एक विराट् आयोजन हुआ जिसमें बाहर से बड़े-बड़े धार्मिक नेता पधारे थे। सनातनधर्मियों और आर्यसमाजियों के बीच उन दिनों गर्मागर्म बहस चलती रहती थी। इस आयोजन में हम लोगों ने बच्चू सूर को भी बुलाया था। उक्त सभा में संस्कृत के परम विद्वान पं. अखिलानंद ने प्रायः 2 घंटे तक संस्कृत में भाषण दिया। उक्त भाषण को उनके बाद बच्चू सूर ने ज्यों का त्यों पद्य में सुना दिया। यही नहीं, जहाँ जहाँ पंडित जी खाँसे थे या ठहरे थे, उसका वर्णन भी दोहे और चौपाइयों में कर दिया।

इन सब चमत्कारों का मेरे बाल-हृदय पर बहुत प्रभाव पड़ता था और मैं समझता था कि कवि च-शक्ति ही मनुष्य को विशिष्ट और महान बना सकती है। यह आश्चर्य अवश्य होता था कि इतनी प्रभूत काव्यशक्ति के रहते भी बच्चू सूर रुपयों के इतने पीछे क्यों पड़े रहते हैं क्योंकि गया से बाहर यदि कोई उन्हें ले जाना चाहता था तो वे उसके लिए हमारी नित्य की भेंट के अतिरिक्त और गहरी रकम वसूल किया बिना नहीं जाते थे।

बच्चू सूर के इस संस्मरण में मैं अपनी स्मृति से उनकी कुछ समस्यापूर्तियों के सारांश यहाँ गद्य में दे रहा हूँ जिससे उनकी विलक्षणता का पता चलेगा और पाठकों का मनोरंजन भी होगा।

एक समस्या थी -

केहि कारण चाँद को चूमत चींटी

इसकी पूति में बच्चू सूर ने बताया कि एक बार शिव पार्वती के साथ जलविहार को मानसरोवर में उतरे और चंद्रमा को उन्होंने सिर से उतार कर किनारे पर रख दिया। उसके अमृत के मिठास से खिँचकर चीटियाँ उसके निकट पहुँच गयीं और उसे चाटने लगीं अंत में बच्चू सूर ने सवैया का अंतिम भाग कहा - एहि कारण चाँद को चूमत चींटी। चींटी की तुक उन्होंने सवैया में जितनी शीघ्र बैठायी, वह भी कम आश्चर्यजनक नहीं थी।

दूसरी समस्या थी -

केहि कारण स्यार अकाश में रोवे

इसकी पूर्ति उन्होंने इस प्रकार सवैये में की कि जब हनुमानजी संजीवनी बूटी को न पहिचान सकने के कारण पूरा पहाड़ उठाकर चले तो एक सियार उसकी खोह में दुबका था जिसकी स्यारनी भोजन की खोज में भूमि पर निकल गयी थी। जब उस सियार ने अपने को पहाड़ के साथ आकाश में उड़ते हुए पाया और अपनी प्राणप्रिया को धरती पर आकाश की ओर हताश होकर देखते हुए देखा तो वह आकाश में पर्वत के साथ उड़ता हुआ हुआँ-हुआँ के करुण स्वर में क्रंदन करने लगा। **एहि कारण स्यार अकास में रोवे।**

एक समस्या थी, **किमि पावक पुंज में पंकज फूल्यो।** बच्चू सूर ने तुरत एक सवैया पढ़ा जिसका तात्पर्य था कि जब भगवान राम के आदेश से सीता माता को अग्नि परीक्षा देनी पड़ी तो वे आग की लपटों में घिरी हुई भी, बिना उनकी ज्वाला से प्रभावित हुए, ऐसी लगती थीं **जिमि पावक-पुंज में पंकज फूल्यो।**

इस प्रकार हमारे पौराणिक आख्यानों से संदर्भ ग्रहण कर बच्चू सूर तुरत कवित्त या सवैया छंद में समस्यापूर्ति कर देते थे। जिन्हें समस्यापूर्ति की विधा से परिचय नहीं हो, क्योंकि यह विधा अब कविसम्मेलनों में शायद ही कहीं देखी जाती है, उनके लिए यह बताना आवश्यक है कि समस्यापूर्ति में जो समस्या दी गयी हो, उसे उसीकी लयवाले छंद में, उसीके तुकांत का प्रयोग करते हुए, इस प्रकार बैठाना होता है कि अंत के चरण में वह पंक्ति अपने उत्तर को समेटती हुई फिट बैठ जाय।

रामायण के अर्थ में भी प्रत्येक चौपाई पर बच्चू सूर पद्य में गार्ड साहब और मुंशीजी के उत्तर-प्रत्युत्तर को बताते हुए एक-से-एक ऐसे विलक्षण अर्थ कर देते थे जिन्हें संभवतः स्वयं तुलसीदासजी ने भी नहीं सोचा होगा।

बच्चू सूर प्रत्येक शंका के अनेक समाधान गार्ड साहब से करवाते थे जिनके बोलने का वर्णन करते हुए वे कहते - **लै कर में बोल्यो कलम, धीर, वीर रेलेश** और वे मुंशी को चेतावनी दिलाते हुए किसी भी शंका के उत्तर में यह भी कहला देते थे - **इस चौपाई के अरथ होंगे अभी अनेक, मुंशी शंका मत करो, धरो धरम की टेक।** परंतु मुंशीजी पल्ले दर्जे के जिद्दी थे। कोई भी चौपाई हो, उनके पास शंका तैयार ही मिलती थी।

यह अवश्य था कि जनता द्वारा दी गयी चौपाई को कभी-कभी बच्चू सूर क्षेपक बता कर चुप हो जाते थे। क्षेपक का अर्थ न जानने के कारण मैं हैरान रहता था और सोचता था कि शायद गार्ड साहब जिस चौपाई पर मुंशीजी से चर्चा न कर सके हों, उसे क्षेपक कह दिया जाता है।

कुछ चमत्कारिक उत्तर की बानगी देखिए। एक चौपाई (अर्धाली) दी गयी थी - जनक की राजसभा में लक्ष्मण के रोषपूर्ण उत्तर की —

कंदुक इव ब्रह्मांड उठाऊँ

सत जोजन प्रमाण लै धाऊँ

मुंशीजी ने तुरत शंका का तीर छोड़ा—

लक्ष्मणजी तो शेषावतार थे और भगवान के छोटे भाई भी थे। उन्होंने 'सत जोजन' जाने का ही प्रमाण क्यों दिया। क्या वे एक सौ जोजन से अधिक दूरी तक ब्रह्माड को उठाकर नहीं ले जा सकते थे ?

शंका जैसी अटपटी है, उसका उत्तर भी वैसा ही अनोखा है जिसे मैं गद्य में दे रहा हूँ—

धीरवीर रेलेश ने कहा - 'इसमें तो कहीं सौ जोजन तक ही ले जाने की बात ही नहीं कही गयी है - इसमें तो कहा गया है कि 'सत जो जन' अर्थात यदि मैं सच्चा आपका भक्त हूँ तो प्रमाण लै धाऊँ' अर्थात् जहाँ तक सृष्टि के लय का अर्थात् प्रलय का प्रमाण है, वहाँ तक ले के दौड़ता हुआ जा सकता हूँ।'

इसी प्रकार **विप्ररूप धरि कपि तहँ गयऊ, माथ नाइ, पूछत अस भयऊ** के प्रसंग पर मुंशीजी ने तुरंत शंका जड़ी—'हनुमानजी जब विप्ररूप में गये थे तो धनुषवाणधारी क्षत्रिय-कुमारों के आगे उन्होंने सिर कैसे झुकाया। **केहि कारण तुलसी लिखि दयऊ, माथ नाइ पूछत अस भयऊ।**

इसके उत्तर में गार्ड साहब से बच्चू सूर ने बीसों समाधान प्रस्तुत करवाये। उनमें से दो मुझे याद हैं - 'हनुमानजी ने विप्ररूप तो अपने असली वानररूप को छिपाने को बनाया था, वह छल भगवान के सम्मुख भला कैसे टिक सकता था! वे अपने विप्ररूप को भगवान की अलौकिक छवि को देखकर भूल बैठे और सिर झुकाकर बोले।' दूसरा समाधान था— हनुमानजी पहाड़ की चोटी से राम-लक्ष्मण का भेद लेने उतरे थे कि कहीं बाली के दूत न हों और उनके स्वामी सुग्रीव को भागना न पड़े, अतः वे पहाड़ पर से भूमि पर पूरी तरह नहीं उतरे और दूर से ही पूछने लगे। जब कोई व्यक्ति ऊँचे स्थान से नीचे के स्थान पर खड़े व्यक्ति से कुछ पूछेगा तो सिर झुकाकर ही तो पूछेगा! **एहि ते तुलसिदास लिखि दयऊ, माथ नाइ पूछत अस भयऊ**

यह प्रसंग पिछली पीढ़ी के एक अत्यंत विलक्षण पुरुष की हलकी सी झाँकी देने के लिए और रोचकता की दृष्टि से मैंने यहाँ थोड़े विस्तार से लिखा है। बच्चू सूर की मेरी स्मृति 1932 ई. से लेकर 1940 ई. के बीच की है अर्थात् जब मैं 7-8 वर्ष का था उस समय से लेकर जब मैं 15-16 वर्ष का हो गया उस समय तक की। उसी कालावधि में बच्चू सूर का हमारे यहाँ आना-जाना होता रहा इसलिए मेरी बाल्यावस्था की स्मृति-मंजूषा में एक से एक असली-नकली मणियाँ उनके संबंध में भरी हैं जिनमें से कुछ मैंने ऊपर प्रस्तुत की हैं।